मोहम्मद बिन तुगलक (प्रथम दिन)

गियासुद्दीन की मृत्यु के तीन दिन बाद जूना खाँ ने मोहम्मद बिन तुगलक के नाम से स्वयं को सुल्तान घोषित किया। लगभग चालीस दिन बाद उसने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया और बिना किसी विरोध का सामना किए सिंहासन पर बैठा। मोहम्मद तुगलक के इतिहास का मुख्य स्रोत जियाउद्दीन बर्नी था जिसने फिरोज शाह तुगलक के काल में अपने ग्रंथ की रचना की इसके अतिरिक्त तारीख-ए-फिरोजशाही, फतुहात-ए-फिरोजशाही, मशात-ए-माहरू और तुगलकनामा है। इब्नबतूता भी मोहम्मद बिन तुगलक के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी देता है। मोहम्मद बिन तुगलक ने उसे मुख्य काजी नियुक्त किया और 1342 ई० मे अपना दूत बनाकर चीन भेजा।

मोहम्मद-बिन-तुगलक ने अपनी स्थिति को मजबूत करने के उद्देश्य से राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास किया और उसने अलाउद्दीन खिलजी की भाँति दोआब पर कर बढ़ा दिए। जब उसने किसानों के साथ जबरदस्ती करनी चाही तो किसान भूमि छोड़कर चले गए। इस प्रकार उसका यह प्रयोग असफल रहा।

मोहम्मद बिन तुगलक ने प्रशासन में सुधार लाने और राजधानी को सुरक्षित बनाने के लिए राजधानी को स्थानान्तरित करने का फैसला किया। उसने अपनी

P.T.O

Scanned with CamScanner

राजधानी दिल्ली से दौलताबाद बदल दी और दिल्ली के समस्त नागरिकों को समान सहित दौलताबाद जाने का आदेश दिया। दौलताबाद की आबओ हवा रास न आई और फिर से प्रजा को वापस दिल्ली चलने का आदेश दे दिया। इससे काफी धन-जन की हानि हुई और यह प्रयास असफल रहा।

सुल्तान ने तीसरा प्रयास मुद्रा के क्षेत्र में किया और चाँदी के स्थान पर ताँबे के सिक्के चलाए परन्तु जाली टकसालों पर नियंत्रण स्थापित करने में असफल रहा। इसी कारण उसका खजाना खाली हो गया और उसे ताँबे की मुद्रा के प्रचलन को वापस लेना पड़ा।

Scanned with CamScanner